Jagdish ji ki aarti

ॐ जय जगदीश हरे

स्वामी जय जगदीश हरे

भक्त जनों के संकट

दास जनों के संकट क्षण में दूर करे

ॐ जय जगदीश हरे

जो ध्यावे फल पावे दुःखबिन से मन का

स्वामी दुःखबिन से मन का

सुख सम्पति घर आवे सुख सम्पति घर आवे

कष्ट मिटे तन का

ॐ जय जगदीश हरे

मात पिता तुम मेरे शरण गहूं किसकी

स्वामी शरण गहूं मैं किसकी

तुम बिन और न दूजा तुम बिन और न दूजा

आस करूं मैं जिसकी

ॐ जय जगदीश हरे

तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तर्यामी

स्वामी तुम अन्तर्यामी

पारब्रह्म परमेश्वर पारब्रह्म परमेश्वर

तुम सब के स्वामी

ॐ जय जगदीश

हरे तुम करुणा के सागर तुम पालनकर्ता

स्वामी तुम पालनकर्ता

मैं मूरख फलकामी मैं सेवक तुम स्वामी

कृपा करो भर्ता

ॐ जय जगदीश हरे

तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति

स्वामी सबके प्राणपति

किस विधि मिलूं दयामय किस विधि मिलूं दयामय

तुमको मैं कुमति

ॐ जय जगदीश

हरे दीन-बन्धु दुःख-हर्ता ठाकुर तुम मेरे

स्वामी रक्षक तुम मेरे अपने हाथ उठाओ

अपने शरण लगाओ द्वार पड़ा तेरे

ॐ जय जगदीश

हरे विषय-विकार मिटाओ पाप हरो देवा

स्वमी पाप हरो देवा

श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ

सन्तन की सेवा

ॐ जय जगदीश हरे

ॐ जय जगदीश

हरे स्वामी जय जगदीश हरे

भक्त जनों के संकट दास जनों के संकट क्षण में दूर करे

||ॐ जय जगदीश हरे||